DEPART of POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR, BIHAR.

DR. A.K. Yadav
(ASSTT Prof. G.P.T.)
Mo - 9415376545

B.A - PART - I (H) - Paper - II

Lecture - No - 09

Date - 17-07-20

स्वामी विवेकानंद का योगदान —

स्वामी विवेकानंद का जीवन दर्शन बताता है कि उनतालीस वर्ष के संक्षिप्त जीवन काल में स्वामी विवेकानंद जो काम कर गये वे आने वाली अनेक शताब्दियों तक युवा पीढ़ीयों का मार्गदर्शन करते रहेंगे। तीस वर्ष की आयु में स्वामी विवेकानंद ने शिकागो, अमेरिका के विश्व धर्म सम्मेलन में हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व किया और उसे सार्वभौमिक पहचान दिलाई। गुरु देव रविन्द्रनाथ ठाकुर ने एक बार कहा था - "यदि आप भारत को जानना चाहते है विवेकानंद को पढ़िये। उनमें आप सब कुछ सकारात्मक ही पायेंगे, नकारात्मक कुछ भी नहीं।"

वे केवल संत ही नहीं एक महान देशभक्त, वक्ता, विचारक, लेखक और मानव प्रेमी भी थे। अमेरिका से लौटकर उन्होंने देशवासियों आह्वान करते हुए कहा था — "नया भारत निकल पड़े मोची की दुकान से, भड़भुंजे के भाड़ से, कारखाने से, हाट से बाजार से, निकल पड़े झाड़ियों, जंगलों पहाड़ों, पर्वतों से।" और जनता ने स्वामी की पुकार का उत्तर दिया। वह गर्व के साथ निकल पड़ी। महात्मा गांधी को आजादी की लड़ाई में जो जन समर्थन मिला वह विवेकानंद के आह्वान का ही फल था। इस प्रकार वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के भी एक प्रमुख प्रेरणा के स्रोत बने। उनका विश्वास था कि पवित्र भारत वर्ष धर्म एवं दर्शन की पुण्यभूमि है। यहीं बड़े-बड़े महात्माओं एव ऋषियों का जन्म हुआ, यही सन्यास एवं त्याग की भूमि है तथा यही केवल यही आदिकाल से लेकर आज तक मनुष्य के लिए जीवन के सर्वोच्च आदर्श एवं मुक्ति का द्वार खुला हुआ है। उनके कथन - "उठो, जागो, स्वयं जागकर औरों को जगाओ! अपने नर जन्म को सफल करो और तब तक न रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाये।"

19 वीं सदी के आखिरी वर्षों में स्वामी विवेकानंद सशस्त्र या हिंसक क्रांति के जरिये भी देश को आजाद करना चाहते थे, परन्तु उन्हें जल्द ही यह विश्वास हो गया था कि

परिस्थितियां उन इरादों के लिए अभी परिपक्व नहीं है। उसके बाद ही विवेकानंद ने 'एकला चलो' की नीति का पालन करते हुए एक परिव्राजक के रूप में भारत और दुनियां को खंगाल डाला उन्होंने कहा था कि मुझे बहुत से युवा सन्यासी चाहिए जो भारत के गाँवों में फैलकर देशवासियों की सेवा में खप जाये उनका यह सपना पूरा नहीं हुआ। विवेकानंद पुरोहितवाद, धार्मिक आडम्बरों, कठमुल्लापन और रूढ़ियों के सख्त खिलाफ थे। उन्होंने धर्म को मनुष्य की सेवा के केंद्र में रखकर ही आध्यात्मिक चिंतन किया था। उनका हिन्दू धर्म अटपटा, लिजलिजा और वायवीय नहीं था। उन्होंने यह विद्रोही बयान दिया था कि इस देश के 33 करोड़ भूखे दरिद्र और कुपोषण के शिकार लोगों को देवी देवताओं की तरह मंदिरों में स्थापित कर दिया और मंदिरों से देवी-देवताओं की मूर्तियों को हटा दिया जाय।

उनका यह कालजयी आह्वान 21 वीं सदी के पहले दशक के अंत में एक बड़ा प्रश्नवाचक चिह्न खड़ा करता है, उनके इस आह्वान को सुनकर पूरे पुरोहित वर्ग की घिग्घी बँध गयी थी। आज कोई दूसरा साधु तो क्या सरकारी मशीनरी भी किसी अवैध मंदिर की मूर्ति को हटाने का जोखिम नहीं उठा सकती। विवेकानंद के जीवन की अंतिम आवाज यही थी कि वे इस बात से आश्वस्त थे कि धरती की गोद में यदि ऐसा कोई देश है जिसने मनुष्य की हर तरह की अच्छाई के लिए ईमानदारी से कोशिश की है तो वह भारत देश ही है। उन्होंने पुरोहितवाद, ब्राह्मणवाद, धार्मिक कर्मकाण्ड और रूढ़ियों की खिल्ली भी उड़ाई और लगभग आक्रमणकारी भाषा में ऐसी विसंगतियों के खिलाफ युद्ध भी किया उनकी दृष्टि में हिन्दू धर्म की सर्वश्रेष्ठ चिंतकों के विचारों का निचोड़ पूरी दुनिया के लिए अब भी ईर्ष्या का विषय है।

अन्तत: हम कह सकते है स्वामी विवेकानंद की भारतीय राजनीतिक दर्शन मे अमूल्य योगदान है। उन्होने एक वेदान्ती साधु की भारतीय सभ्यता और संस्कृति की तटस्थ, वस्तुपरक और मूल्यगत विचार दिया जो आज की युवा पिढ़ी के लिए मार्गदर्शक का कार्य करती है।

BY- DR. A.K. Yadav (Pol. Sc.)
ASSTT. Prof- (J.P.U.)

Scanned with CamScanner

DEPARTMENT of POLITICAL SCIENCE
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR, BIHAR.

DR. A. K. Yadav
ASSTT-Prof (G.P.E.L)
mo- 9415376545

B.A, Part-I (HON'S)- Paper - II

Date[redacted] 17-07-20

Lecture-No-10

स्वामी विवेकानंद एवं राष्ट्रीय युवा दिवस तथा कुछ अति महत्वपूर्ण विचार- विवेकानंद के शब्दों में

भारत में स्वामी विवेकानंद की जयन्ती अर्थात 12 जनवरी को प्रतिवर्ष राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्णयानुसार सन 1984 ई० को 'अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष' घोषित किया गया। संयुक्त राष्ट्र संघ के महत्व का विचार करते हुए भारत सरकार ने घोषणा की कि सन 1984 ई० से 12 जनवरी यानी स्वामी विवेकानंद जयंती का दिन राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में देशभर में सर्वत्र मनाया जाए। इस सन्दर्भ में भारत सरकार का विचार था कि -" ऐसा अनुभव हुआ कि स्वामी जी का दर्शन एवं स्वामी जी के जीवन तथा कार्य के पश्चात निहित उनका आदर्श यही भारतीय युवकों के लिए प्रेरणा का बहुत बड़ा स्रोत हो सकता है।" इस दिन देशभर के विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में तरह-तरह के कार्यक्रम होते हैं, रैलियाँ निकाली जाती हैं, योगासन की स्पर्धा आयोजित की जाती है, पूजा-पाठ होती है, व्याख्यान होते हैं, विवेकानंद साहित्य की प्रदर्शनी लगती है।

वास्तव में स्वामी विवेकानंद आधुनिक मानव के आदर्श प्रतिनिधि हैं। विशेषकर भारतीय युवकों के लिए विवेकानंद से बढ़कर दूसरा कोई नेता नहीं हो सकता। उन्होंने हमें कुछ ऐसी वस्तु दी है जो हममें अपनी उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त परम्परा के प्रति एक प्रकार का अभिमान जगा देती है। स्वामी जी ने जो कुछ लिखा है, वह हमारे लिए हितकर है और होना भी चाहिए तथा वह आने वाले लम्बे समय तक हमें प्रभावित करता रहेगा। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में उन्होंने वर्तमान भारत को दृढ़ रूप से प्रभावित किया है। भारत की युवा पीढ़ी स्वामी विवेकानंद से निःसृत होने वाले ज्ञान, प्रेरणा एवं तेज के स्रोत से लाभ उठाएगी। आज युवा पीढ़ी को नये-नये खोज और विचारधाराओं की जरूरत है तथा बेरोजगारी आज भी देश की सबसे प्रमुख समस्याओं में से एक है और आज देश की युवा

पीढ़ी को स्वामी विवेकानंद के महान विचारों से बहुत मदद मिल सकती है। उन्हें आप संकल्पशक्ति, विचारों की ऊर्जा अध्यात्म और आत्म-विश्वास की पॉवरहाउस भी कह सकते हैं। विवेकानंद के जीवन के सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उन्होंने दुनिया को भारत की शक्ति से परिचित कराया तथा स्वामी विवेकानंद के महान विचार आज भी युवाओं के लिए प्रासंगिक बने हुए हैं जो उन्हें समय एवं परिस्थिति के अनुसार ऊर्जा से भर देते हैं।

अति महत्वपूर्ण विचार —

(1) "उठो जागो और तब तक नहीं रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त नहीं हो जाता।"

(2) "एक समय में एक काम करो और ऐसा करते समय अपनी पूरी आत्मा उसमें डाल दो और बाकि सब कुछ भूल जाओ।"

(3) "पहले हर अच्छी बात का मजाक बनता है फिर विरोध होता है और फिर उसे स्वीकार लिया जाता है।"

(4) "एक अच्छे चरित्र का निर्माण हजारो बार ठोकर खाने के बाद ही होता है।"

(5) "एक विचार लें और इसे ही अपनी जिंदगी का एकमात्र विचार बना लें। इसी विचार के बारे में सोचे, सपना देखें और इसी विचार पर जिएं। आपके मस्तिष्क, दिमाग और रगों में यही एक विचार भर जाए। यही सफलता का रास्ता है। इसी तरह से बड़े-बड़े आध्यात्मिक धर्म पुरुष बनते हैं।"

By- DR. Anil. Yadav (PH-SC)
(Asstt prof. G.P.I.T.)

Scanned with CamScanner